# 23 जब मैंने पहली पुस्तक खरीदी




**धर्मवीर भारती**

**( जन्म : सन् 1926 ई. : निधन : सन् 1997 ई. )**

धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर, 1926 ई. को इलाहाबाद में हुआ था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्हों ने एम.ए., पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। वहाँ हिन्दी विभाग के प्राध्यापक नियुक्त हुए। सन् 1960 से 1988 तक 'धर्मयुग' जैसे प्रतिष्ठित साप्ताहिक का सम्पादन कार्य किया। उन्होंने देश-विदेश की यात्राएँ भी की थी। भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सन्मानित किया था और साहित्य सेवा के लिए 'व्यास सम्मान' से अलंकृत किया गया था।

धर्मवीर भारती नयी कविता के श्रेष्ठ कवि, उपन्यासकार, कहानीकार और निबंधकार थे। 'अंधायुग', 'कनुप्रिया', 'सातगीत वर्ष', 'ठंडा लोहा' उनके काव्य-संग्रह है। काव्य-नाटक अंधायुग उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना हैं। 'गुनाहों के देवता', 'सूरज का साँतवाँ घोड़ा' तथा 'ग्यारह स्वप्नों का देश' उनके प्रमुख उपन्यास हैं। 'गुल की बन्नो', 'बन्द गली का आखिरी मकान' आदि कहानियों का हिन्दी की नयी कहानी में विशिष्ट स्थान हैं। 'ठेले पर हिमालय' और 'पश्यंती' उनके निबंध-संग्रह हैं।

प्रस्तुत संस्मरण द्वारा धर्मवीर भारतीजी ने अपने बचपन के दिनों की बातों को हमारे सामने रखा है। उनका बचपन गरीबी में बीता था। लेकिन उनको पढ़ने का बड़ा शौक था। स्कूल में से इनाम में दो किताबें मिली तो पिताजी ने अपनी अलमारी में जगह देकर लेखक की अपनी लाइब्रेरी बना दी। वहाँ से लेखक को किताबें इकट्ठी करने की धुन सवार हो गई। माँ ने पिक्चर देखने के लिए दो रुपये दिये थे लेकिन, लेखक का मन पलट जाता हैं और वे पुस्तक की दुकान में से दस आने की 'देवदास' नाम की पुस्तक खरीदतें हैं। लेखक ने अपने पैसों से खरीदी हुई वह पहली किताब थी। इस पाठ में लेखक ने जीवन में पुस्तकों के महत्त्व पर प्रकाश डाला है।

बचपन की बात है। उस समय आर्यसमाज का सुधारवादी आन्दोलन पूरे जोर पर था। मेरे पिता आर्यसमाज रानीमंडी के प्रधान थे और माँ ने स्त्री शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी।

पिता की अच्छी-खासी सरकारी नौकरी थी, बर्मा रोड जब बन रही थी तब बहुत कमाया था उन्होंने। लेकिन मेरे जन्म के पहले ही गाँधीजी के आह्वान पर उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। हम लोग बड़े आर्थिक कष्टों से गुजर रहे थे फिर भी घर में नियमित पत्र-पत्रिकाएँ आती थीं- 'आर्यमित्र', 'साप्ताहिक', 'वेदोदय', 'सरस्वती', 'गृहणी' और दो बाल पत्रिकाएँ खास मेरे लिए 'बालसखा' और 'चमचम'। उनमें होती थी परियों, राजकुमारों, दानवों और सुन्दर राजकन्याओं की कहानियाँ और रेखाचित्र। मुझे पढ़ने की चाह लग गयी। हर समय पढ़ता रहता। खाना खाते समय थाली के पास पत्रिकाएँ रखकर पढ़ता। अपनी दोनों पत्रिकाओं के अलावा भी 'सरस्वती' और 'आर्यमित्र' पढ़ने की कोशिश करता। घर में पुस्तकें भी थीं। उपनिषदें और उनके हिन्दी अनुवाद - सत्यार्थ प्रकाश। 'सत्यार्थ प्रकाश' के खंडन-मंडन वाले अध्याय पूरी तरह समझ में नहीं आता था पर पढ़ने में मजा आता था।

मेरी प्रिय पुस्तक थी स्वामी दयानन्द की एक जीवनी, रोचक शैली में लिखी हुई, अनेक चित्रों से सुसज्जित। वे तत्कालीन पाखंडों के विरुद्ध अदम्य साहस दिखाने वाले अद्‌भुत व्यक्तित्व थे। कितनी ही रोमांचक घटनाएँ थीं उनके जीवन की जो मुझे बहुत प्रभावित करती थी। चूहे को भगवान का मीठा खाते देख कर मान लेना कि प्रतिमाएँ भगवान नहीं होती, घर छोड़कर भाग जाना। तमाम तीर्थों, जंगलों, गुफाओं, हिमशिखरों पर साधुओं के बीच घूमना और हर जगह इसकी तलाश करना कि भगवान क्या है? सत्य क्या है? जो भी समाज विरोधी, मनुष्य विरोधी मूल्य हैं, रूढ़ियाँ हैं उनका खंडन करना और अन्त में अपने हत्यारे को क्षमा कर उसे सहारा देना। यह सब मेरे बालमन को बहुत रोमांचित करता।

माँ स्कूली पढ़ाई पर जोर देती। चिन्तित रहती कि लड़का कक्षा की किताबें नहीं पढ़ता। पास कैसे होगा? कहीं खुद साधु बनकर फिर से भाग गया तो? पिता कहते जीवन में यही पढ़ाई काम आयेगी पढ़ने दो। मैं स्कूल नहीं भेजा गया था, शुरू की पढ़ाई के लिए घर पर मास्टर रक्खे गये थे। पिता नहीं चाहते थे कि नासमझ उम्र में मैं गलत संगति में पड़ कर गाली-गलौज सीखूँ, बुरे संस्कार ग्रहण करूँ। अत: स्कूल में मेरा नाम लिखाया गया, जब मैं कक्षा दो तक की पढ़ाई घर पर कर चुका था। तीसरे दर्जे में भर्ती हुआ। उस दिन शाम को पिता उँगली पकड़ कर मुझे घुमाने ले गये। लोकनाथ की एक दुकान से ताजा अनार का शर्बत मिट्‌टी के कुल्हड़ में पिलाया और सर पर हाथ रख कर बोले - 'वायदा करो कि पाठ्यक्रम की किताबें भी इतने ही ध्यान से पढ़ोगे, माँ की

चिन्ता मिटाओगे। 'उनका आशीर्वाद था या मेरा जी तोड़ परिश्रम कि तीसरे चौथे में मेरे अच्छे नम्बर आये और पाँचवें दर्जे में तो मैं फर्स्ट आया।' माँ ने आँसू भर कर गले लगा लिया, पिता मुस्कुराते रहे, कुछ बोले नहीं।

अंग्रेजी में मेरे नम्बर सबसे ज्यादा थे, अत: स्कूल से इनाम में दो अंग्रेजी किताबें मिली थीं। एक में दो छोटे बच्चे घोंसलों की खोज में बागों और कुंजों में भटकते हैं और इस बहाने पक्षियों की जातियाँ, उनकी बोलियाँ, उनकी आदतों की जानकारी उन्हें मिलती हो। दूसरी किताब थी 'ट्रस्टी द रग' जिसमें पानी की कथाएँ थीं, कितने प्रकार के होते हैं। कौन-कौन सा माल लाद कर लाते हैं, कहाँ ले जाते हैं, नाविकों की ज़िन्दगी, कैसी होती है, कैसे-कैसे जीव मिलते हैं, कहाँ व्हेल होती है, कहाँ शार्क होती है।

इन दो किताबों ने एक नई दुनिया का द्वार मेरे लिए खोल दिया। पक्षियों से मेरा आकाश और रहस्यों से भरा समुद्र। पिता ने अलमारी के एक खाने में अपनी चीजें हटाकर जगह बनायी और मेरी दोनों किताबें उस खाने में रख कर कहा, 'आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का। यह तुम्हारी लाइब्रेरी है।' यहाँ से आरम्भ हुई उस बच्चे की लाइब्रेरी। आप पूछ सकते हैं कि किताबें पढ़ने का शौक तो ठीक, किताबें इकट्ठी करने की सनक क्यों सवार हुई, उसका कारण भी बचपन का एक अनुभव है।

इलाहाबाद भारत के प्रख्यात शिक्षा केन्द्रों में एक रहा है। ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा स्थापित पब्लिक लाइब्रेरी से लेकर महामना मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित भारती भवन तक। अपने मुहल्ले में एक लाइब्रेरी थी हरि भवन। स्कूल से छुट्टी मिली कि मैं उसमें जाकर अध्ययन करता ।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**आह्वान** बुलावा **अदम्य** जो दबाया न जा सके, प्रबल **रोमांचित** पुलकित, जिसके रोयें खडे हों **टोल्सटाय** रुसी कथाकार **विक्टर ह्यूगो** फ्रांसिसी कथाकार **मैक्सिम गोर्की** एक रुसी कथाकार **ईश्यू कराना** निर्गत कराना **कोशिश** प्रयत्न **रोचक** रुचि अनुसार **जीवनी** जीवनचरित्र **खंडन** विभाजन **संगति** संगत, मेल **कुल्हड़** मिट्टी का बरतन **अक्सर** खास करके **सहमति** अनुमोदन

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(1) माँ की स्कूली पढ़ाई पर जोर देने से लेखक की पढ़ाई पर क्या असर हुआ?

(2) लेखक की प्रिय पुस्तक कौन-सी थी? वे किन बातों से सम्बन्धित थी?

(3) माँ के दिये हुए रुपयों का लेखक ने क्या किया? क्यों?

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :**

(1) बचपन में लेखक के घर में कौन-कौन सी पत्रिकाएँ आती थी?

(2) बचपन में लेखक को स्वामी दयानन्दजी की जीवनी क्यों पसंद थी?

(3) लेखक को अंग्रेजी में सबसे अधिक अंक पाने के बाद उपहार में कौन सी दो पुस्तकें मिली थी और उनसे लेखक को क्या जानकारी प्राप्त हुई?

(4) लेखक की माँ ने लेखक को कितने रुपये दिये? क्यों?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**

(1) लेखक को बचपन से क्या शौक था?

(2) लेखक के पिता कहाँ के प्रधान थे?

(3) लेखक की प्रिय पुस्तक कौन सी थी?

(4) लेखक कौन-सी फिल्म देखने गये?

(5) लेखक की माँ की आँखों में आँसू क्यों आ गए?

**4. निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी शब्द लिखिए :**

(1) लाइब्रेरी (2) थियेटर

(3) पिक्चर (4) इंडिया

(5) लाइब्रेरियन

**5. निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :**

(1) आरम्भ ×

(2) आनंद ×

(3) जीवन ×

(4) छोटा ×

(5) दु:ख ×

**6. निम्नलिखित वाक्यों में से साधारण, संयुक्त तथा मिश्रित वाक्यों को पहचान कर नाम लिखिए :**

(1) मेरे पिता आर्य-समाज रानी मंडी के प्रधान थे और माँ ने स्त्री शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी।

(2) माँ स्कूली पढ़ाई पर जोर देती थी।

(3) जल्दी-जल्दी घर लौट आया और दो रुपये में से एक रुपये छह आना माँ के हाथ में रख दिया।

(4) उनका आशीर्वाद था या मेरा जी-तोड़ परिश्रम के तीसरे चोथे में मेरे अच्छे नम्बर आये और पाँचवें दर्जे में तो मैं फर्स्ट आया।

(5) उस साल इण्टरमीडिएट पास किया था।

**7. संधि विग्रह कीजिए :**

(1) वीरोचित (2) रमेश

(3) देवोचित (4) सुरेश

## योग्यता-विस्तार

### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- अपने स्कूल की लाइब्रेरी में जाकर अपनी पसंदीदा पुस्तकों की सूचि बनाइए।

### शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'मेरी प्रिय पुस्तक' विषय पर निबंध लेखन करवाइए।
- विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय 'नेशनल लाइब्रेरी' की कक्षा में विद्यार्थिओं की जानकारी दे।

●